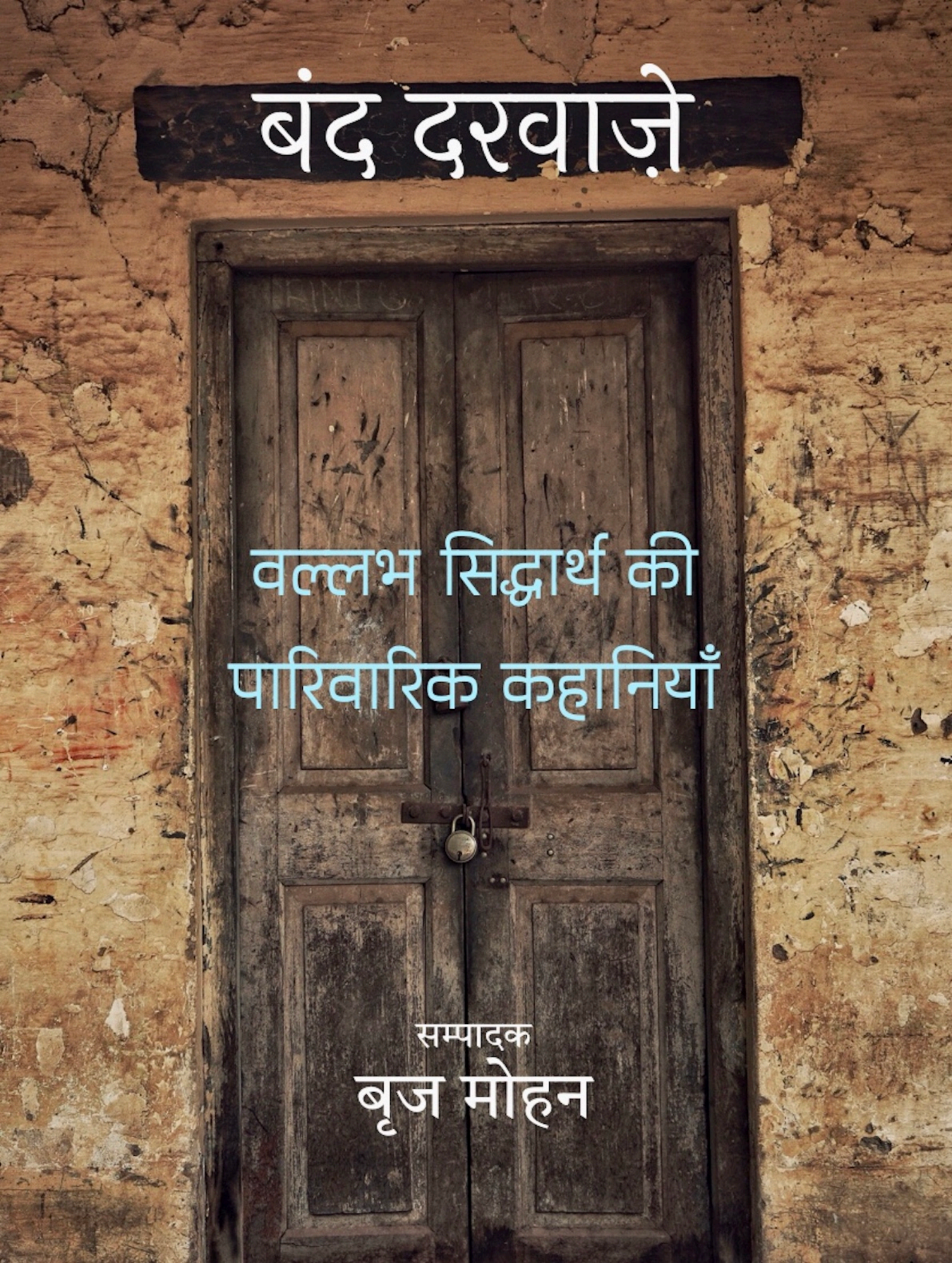

बंद दरवाज़े

वल्लभ सिद्धार्थ की पारिवारिक कहानियाँ

सम्पादक

बृज मोहन

वल्लभ सिद्धार्थ की पारिवारिक कहानियाँ

सम्पादक : बृज मोहन

पारिवारिक पृष्ठभूमि की उकृष्ट कहानियाँ

वल्लभ सिद्धार्थ का एक समय था, जब उनकी कहानियां सारिका, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, कहानी आदि जैसी प्रमुख पत्रिकाओं में ससम्मान स्थान पाती थीं। राजनीतिक हालातों पर उनकी अनेक कहानियां बहुचर्चित हुई, खासतौर से आपातकाल के पहले और आपातकाल के बाद में लिखीं कहानियां। उन्हें ऐसे कथाकार के रूप में अधिक जाना गया, जो कि आजादी के बाद देश में फैली गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी, अकाल से जूझने में सरकार की नाकामी को उजागर करते हैं। उन्होंने राजनेताओं के सत्ता में बने रहने के लिए आर्थिक-राजनीतिक भ्रष्टाचार तथा प्रजातन्त्र की हत्या के षड्यन्त्र पर कहानियां लिखीं और व्यवस्था पर करारी चोट की। इसी क्रम में उनका एकमात्र उपन्यास 'कठघरे' भी काफी चर्चित रहा है।

लेकिन वल्लभ जी की ऐसी कहानियां भी हैं, जिनके केन्द्र में परिवार है और उन प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं, जो शिक्षित घरों में रुचि से पढ़ी जाती थीं और चेतना का संचार करती थीं। अब तो सारी पत्रिकाएं लगभग 25-30 साल पहले बन्द हो चुकी हैं। उन्हीं में से चुनी हुई ये कहानियां हैं । इनमें मध्यवर्गीय परिवारों की आर्थिक विवशता, द्वन्द्व, आपसी सम्बन्धों के घटाव-जुड़ाव, स्वार्थपरता को अनुभव के रूप में देखा जा सकता है । कहीं पिता गैरजिम्मेदार है तो कहीं सन्तानों द्वारा पितृसत्ता का मौन

या सीधे विरोध। कहीं टकराहट का कारक पति का अहं है तो कहीं पत्नी का स्वभाव। कहीं माता-पिता को भावनात्मक चोट पहुचाते हुए बेटियों के आत्मनिर्णय और पछतावे का एहसास कराते गुजरते रात-दिन। माँ की भूमिका वैसी ही, जैसी कि आम मध्यवर्गीय परिवारों में होती है। उभयपक्षीय, इधर भी और उधर भी या कभी शान्ति कायम रखने को एकदम उदासीन। परिवार में चल रहे छोटे-छोटे शीतयुद्ध और कश्मकश के भावनात्मक चित्रण कहानियों में हैं।

पहली कहानी 'नित्य-प्रलय' लम्बी जरूर है, पर इसमें घटनाओं और भावनाओं का सघन मार्मिक चित्रण है। सांसारिकता से अनभिज्ञ अल्पआयु में विधवा हुई अपार सम्पत्ति की मालकिन एक लड़की की माँ को अनेक मुसीबतों से बचाये रखने को किरायेदार भइयाजी एक मजबूत कवच के रूप में संरक्षक की भूमिका में हैं। बाद में मालकिन के मना करने के बाद भी घरजमाई अपने आतंक से उन्हें भयभीत किए रहता है। अपने परिवार की अनहोनियों से क्षणिक स्मृतिलोप के शिकार होकर करुण जीवन जीने को बाध्य हैं। 'क्षेपक' पिता-पुत्र के परस्पर अस्वीकारों की कहानी है। उनके मध्य मृत्यु का इन्तजार करती बीमार माँ है, जिसकी एक दिन मृत्यु हो जाती है तो पिता-पुत्र के बीच सीधे मौन टकराहट रह जाती है। वे जानते हैं कि एक-दूसरे को कभी क्षमा नहीं करेंगे।

पिता की मृत्यु के बाद ताऊ की कृपा पर पलने वाली लड़की और उसकी माँ की

विवशता की करुण कहानी ‘शेष प्रसंग’ है। जिसमें माँ की मृत्यु पश्चात ससुराल से आई लड़की के सामने दिखावे और छल हैं। उसके दुख-दर्द से गहन सहानुभूति रखने वाला ताऊ का लड़का भी उसे मात्र औपचारिक और झूठा लगता है। वह जान रहा है कि उसके सिर्फ एक झूठ की वजह से लड़की उससे भी वैसी ही निरपेक्ष हो रही है, जैसी कि उसकी माँ और पत्नी के प्रति थी।

दायित्व को समझने वाले बढ़ती उम्र के बड़े भाई अपना घर बसाने को इसलिए अपनी पसन्द की लड़की से विवाह करने को वंचित है कि उनके बीच अविवाहित बहिने हैं। ‘लड़कियां’ कहानी में यह बात बड़ी सावधानी से उठाई गई हैं कि लड़कियां हर जगह आफत बनी हुई हैं। अनाहूत’ में दो सगे भाइयों की स्वार्थपरता को रोचक ढंग प्रस्तुत किया गया है। नाना की मृत्यु पर उनकी सम्पत्ति की लालच में बड़ा भाई अनाहूत की तरह पहुंचा है। जबकि छोटे भाई को नाना अपना वारिस बना चुके हैं। नाना पहले बड़े को ही बनाना चाहते थे, लेकिन उसकी कोई सन्तान न होने से उन्होंने विचार बदल दिया था। ‘पक्षपात’ में पत्नी को टीबी की बीमारी है। वह मर रही है, लेकिन उसे शक है कि पति की जिससे पहले शादी होने वाली थी, उस लड़की ने जहर दे दिया है। ऐसी स्थिति में घर के हर सदस्य की मनोव्यवहार व शंका को बड़ी कुशलता से चित्रित किया गया है।

‘बन्द दरवाजे’ में एक बाल-बच्चेदार गैर मर्द के साथ तीन महीने रहकर शुचि घर

लौटी है। उसे घर में प्रवेश मिल तो जाता है, लेकिन माता-पिता, भाई-बहिन के बदले व्यवहार से उसे लगता है कि घर उसके लिए बन्द हैं। इसी तरह 'सारा दिन' में पिता की इच्छा के विरुद्ध अन्तर्जातीय विवाह करने वाली एक युवती, जिसे बाद में पति की एक भी आदत पसन्द नहीं, सारा दिन पहाड़ लगता है। पिता से क्षमा माँगना चाहती है, पर उसका पति आड़े आता रहता है। छोटी बहिन का अपने ऑफिस के मैनेजर से लगाव है, पर दीदी से नफरत करने वाले दुखी पिता को देखकर अपनी भावनाओं का गला घोंटती है। युवती को अपने ही घर में एक शाम ऊबे हुए दिन को खुशनुमा बनाने की किरण दिख जाती है। 'खलनायक' का नायक ही खलनायक है। पिता की जिद पूरी करने को दूसरी शादी कर लेता है। पहली रात ही नवविवाहिता से ऐसी बातें करता है कि अप्रत्याशित उत्तर पाते ही कमरे से भाग खड़ा होता है। इस कहानी में भी पिता-पुत्र की मौन टकराहट है।

'खजुराहों' के पात्र उच्चवर्ग के हैं, जिसकी सुनन्दा खजुराहो की मूर्तियों की तरह सुघड़ और सुन्दर है। किन्तु पति द्वारा सिर्फ इसलिए उपेक्षित है, क्योंकि उसने पति के पूछने पर यह स्वीकार कर लिया है कि उसका शादी के पहले किसी से प्रेम था और वह उसे अपराध नहीं मानती। पति चाहता है कि सुनन्दा क्षमा माँग ले, पर वह क्षमा माँगने को तैयार नहीं। उसकी मान्यता है कि विवाह के बाद यदि किसी से प्रेम हो तो वह अपराध हो सकता है। पति का व्यवहार अक्सर अशोभनीय हो जाता है। खजुराहो जैसे

पर्यटन स्थल की सैर कराती यह कहानी बड़ी खूबसूरती से कही गई है।

इन कहानियों का साहित्यिक महत्त्व है। इनके कथ्य, शिल्प, गठन और कहन अनूठे हैं। एक समय पर परिवारों में आए बदलाओं को कलात्मक ढंग से उत्कृष्ट कहानियों का रूप दिया गया है।

बृज मोहन

'मनोरम', 35, कछियाना, पुलिया नम्बर-9, झांसी-284003

मो. 9415614552

इमेल-mohanbrij27@gmail.com

अनुक्रम

नित्य-प्रलय	8
क्षेपक	43
शेष प्रसंग	69
लड़कियाँ	88
अनाहूत	104
पक्षाघात	120
बन्द दरवाजे	136
खलनायक	163
खजुराहो	174